दया और प्रेम के गौरवमयी 100 साल

अजायब बानी

मासिक पत्रिका

मई-2026

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष–चौबीसवां	अंक–पहला	मई–2026

3 सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
सतगुरु सदा मेरे साथ हैं

13 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
प्लानिंग

23 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा भजन गाने पर दिया संदेश
एक संदेश

27 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से
नाम पारस है

29 शब्द–**उठ जाग मुसाफिर भोर भई**
महाराज कृपाल के मुखारविंद से

30 **किडस कॉर्नर – शेख चिल्ली**

32 सतसंगों के कार्यक्रम की जानकारी
धन्य अजायब

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)

विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 उप संपादक : **नन्दनी**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 290 Website : www.ajaibbani.org

RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

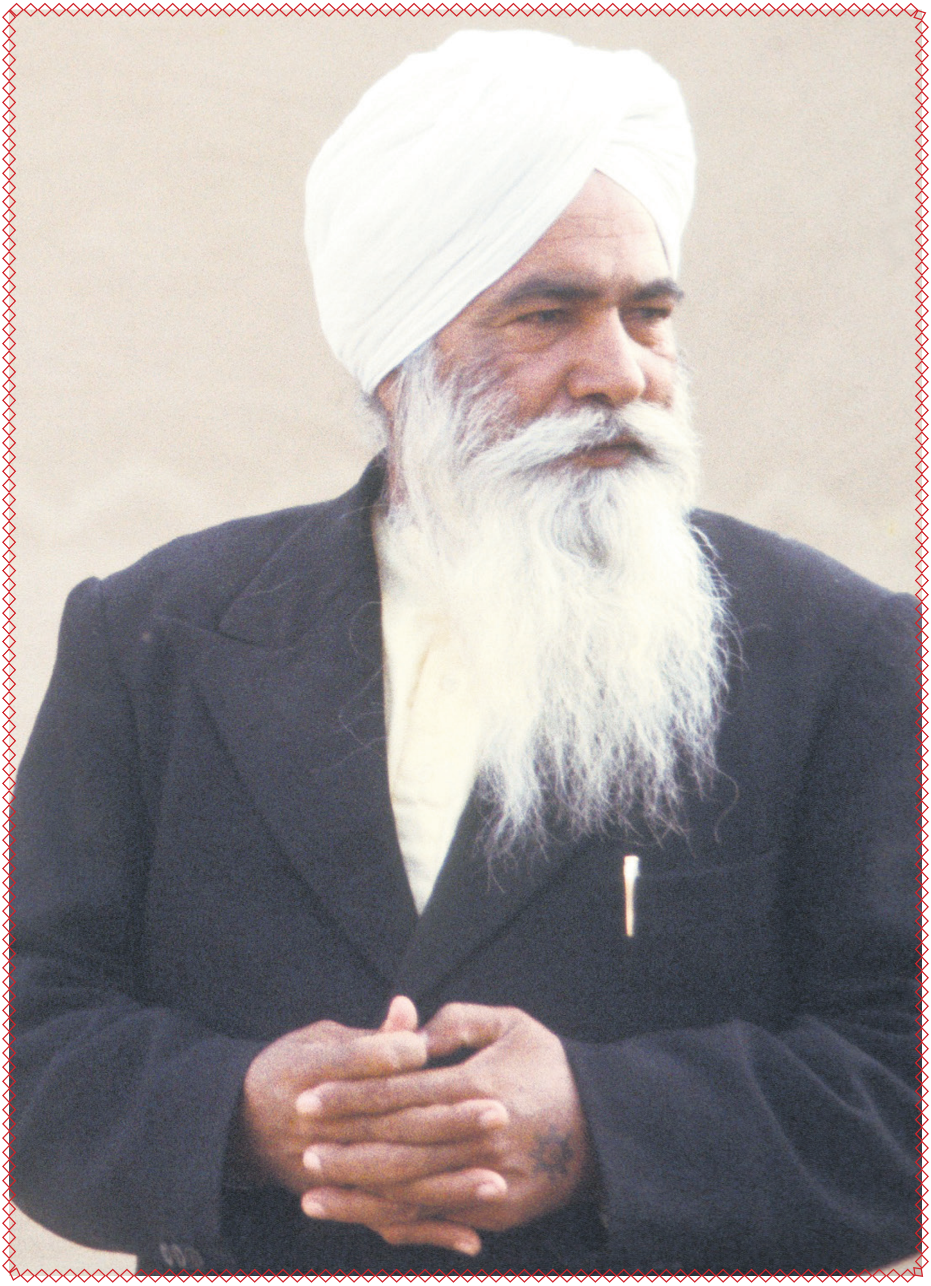

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सतगुरु सदा मेरे साथ हैं

DVD-566(1)

08 जनवरी 1993 | कबीर साहब की बानी | मुम्बई

गुरुदेव के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने अपनी अपार कृपा करके हमें अपनी याद में बैठने का और अपना यश करने का मौका दिया है। आपके आगे कबीर साहब का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है। आप बड़े प्यार से समझाते हैं कि सन्तमत से भोला-भाला आदमी अपनी उक्त, जुगत या चतुराई छोड़कर सन्त रूप मालिक जो रास्ता बताते हैं उस पर चलने से ही वह फायदा उठा सकता है।

चतुराई रीझे नहीं रीझे मन का भाय

सन्तमत अपने आपको न्यौछावर करने का मत है, यह चतुराई का मत नहीं। कहीं हमारे दिल में ख्याल हो कि हम चतुराई से कोई फायदा उठा लेंगे। जब बच्चा किसी भी घराने में पैदा होता है तो वह अपने घर की बोली से नावाकिफ होता है। बच्चे को पता नहीं कि मैंने संसार में किस तरह विचरना है, मेरा किसके साथ क्या रिश्ता है? माता-पिता उसे बहुत प्यार से समझाते हैं कि यह तेरा भाई है, यह तेरी बहन है, यह तेरी बुआ है, यह तेरी मासी है। तुमने इनके साथ कैसा बर्ताव करना है, बच्चा भोला होता है। माता-पिता उसे शुरु में जो कुछ बता देते हैं, बच्चा सारी जिंदगी उस सबक को पका कर चलता है।

भक्ति मार्ग में हम उस बच्चे की तरह ही हैं। जैसे बच्चा चालीस दिन का है, वह शुरु-शुरु में माता-पिता के कहने पर ऐतबार करता है लेकिन रोज-रोज के अभ्यास से उसे कोई कठिनाई नहीं होती। इसी तरह सन्तमत में भी हमारा नया जन्म होता है। शुरु-शुरु में हमें इस पर भरोसा करना पड़ता है। जब हम उनके कहे मुताबिक रोज-रोज अभ्यास करते

हैं, अभ्यास करने से महारत पैदा हो जाती है। अंदर का मार्ग किताब की तरह खुल जाता है फिर शक–शकूक की कोई गुंजाईश नहीं रहती।

हम स्कूल जाते हैं अगर हमारे टीचर यह कहें कि एम.ए. पास करने में सोलह साल लगेंगे, इतनी किताबें पढ़नी पढ़ेंगी तो बच्चा घबरा जाएगा और स्कूल जाना ही छोड़ देगा। बच्चे में जितनी काबलियत होती है, टीचर उसके ऊपर अपनी उतनी ही काबलियत जाहिर करते हैं। धीरे–धीरे बच्चा नीचे से ऊपर की तरफ चढ़ाई करता है, कक्षाएं पढ़ता जाता है आखिर एक दिन वह एम.ए. पास कर लेता है। उसे पता तक नहीं लगता कि मैंने इतनी किताबें पढ़ ली हैं, मैंने इतने साल मेहनत की है।

इसी तरह अगर सन्त हमें यह कहें कि तुम्हें काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार सब कुछ छोड़ना पड़ेगा या इतने साल मेहनत करनी पड़ेगी तो हम भी घबरा जाएंगे। जब हम स्थूल दुनिया में हैं तो सन्त हमें स्थूल दुनिया के लफ्जों और तरीकों से जो हमें आसानी से समझ आ सकें, वही समझाते हैं। सन्त सतसंगों में सदा ही कहते हैं कि सन्त न तो किसी की देह को शिष्य बनाते हैं और न वे अपनी देह को किसी का गुरु बनाते हैं। सन्त 'शब्द' के साथ जोड़कर आत्मा को 'शब्द' का शिष्य बनाते हैं।

जब हम बाहर सतसंग सुनकर रोज अभ्यास करते हुए स्थूल दुनिया से निकलकर सूक्ष्म में जाते हैं तो वहाँ गुरु सूक्ष्म रूप में काम करते हैं। फिर हमें पता चलता है कि देह की संभाल न तो सन्तों की देह करती है और न शिष्य ही देह की संभाल करते हैं। 'शब्द' आत्मा की संभाल करता है। इस अवस्था को गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

शब्द गुरु सुरत धुन चेला सतगुरु झगड़ नबेड़े।

हमारी आत्मा शिष्य है, 'शब्द' ने संभाल करनी है, वही हमारा गुरु है। अगर देह ही देह की संभाल करती हो तो देह को एक मुल्क से दूसरे मुल्क में ले जाने में हमें किसी बाहर के साधन कार या हवाई जहाज की

जरूरत पड़ती है। आपको जिंदगी में ऐसी गवाही भी मिलती है कि सात समुंद्र पार के प्रेमी भी कहते हैं कि गुरुदेव ने हमारी संभाल की, रक्षा की। गुरु तो वहाँ देह लेकर नहीं गए होते तो वह कौन सी चीज है? वह 'शब्द' है जो संभाल करता है, वह सदा साथ ही होता है। इसलिए सन्त कहते हैं कि आत्मा को न आग जला सकती है, न तलवार काट सकती है, न कोई और ही चीज आत्मा को खत्म कर सकती है। इसी तरह 'शब्द' अविनाशी है, 'शब्द' सदा सेवक के साथ रहता है, 'शब्द' कभी नाश नहीं होता। इसे गुरु नानकदेव जी ने कहा हैः

सतगुरु मेरे सदा सदा हैं नाले।

सतगुरु सदा मेरे साथ हैं, मेरे अंग–संग हैं। महाराज कृपाल अपनी जिंदगी का वाक्या बताया करते थे कि वे एक दिन रात को महाराज सावन सिंह जी के पैर दबा रहे थे, उनके साथ डॉक्टर जॉनसन भी थे। बातों–बातों में उन्होंने पूछा, ''महाराज जी, अंतरी और बाहरी स्वरूप में कितना अंतर है?'' महाराज सावन ने हँसकर कहा, ''कृपाल सिंह, जो कुछ आँखों से देख रहे हो, अंदर गुरु इसी स्वरूप में प्रकट होते हैं और इसी स्वरूप में सेवक की संभाल करते हैं।''

जब ऐसा स्वरूप संभाल करता है तो हम कहते हैं कि हमारे गुरुदेव ने संभाल की है फिर सेवक को यह पता चलता है कि मुझे चलता–फिरता भगवान मिल गया है, **सतगुरु सदा मेरे साथ हैं**। जब सेवक की आँखें खुलती हैं, उसे मौका मिलता है तब सेवक यह महसूस करता है कि मैं भगवान के दरबार में बैठा हूँ, मैं भगवान के साथ बात कर रहा हूँ।

मेरी जिंदगी में मेरा मिलाप मेरे प्यारे गुरुदेव के साथ हुआ, वे खुद मेरे घर में आते रहे, मुझे याद है। वह वक्त भूलने वाला नहीं है। मेरे मामा मुझे ताना मारते थे कि तू हमें बदनाम कर रहा है, तू साधू बन गया है, तुझे शादी करवाकर दुनियादार बनना चाहिए था। मैं चुप रहता क्योंकि वे बड़े

थे। एक दिन उन्होंने मुझसे सवाल किया, ''क्या तूने भगवान देखा है?'' मैंने उन्हें बहुत खुशी से जवाब दिया, ''हाँ! मैंने चलता-फिरता भगवान देखा है, वह छह फुट लम्बा है। वह ऐसे बातें करता है जैसे हम बात करते हैं अगर आप मुझे रेडियो पर ब्राडकास्ट करने के लिए मौका दिलवा दें तो मैं अपनी दोनों बाँहें खड़ी करके बहुत फक्र से कह सकता हूँ कि मुझे भगवान मिल गया है।''

जिन पाया तिन्हें छिपाया।

जब सन्त आखिरी स्टेज पर पहुँच जाते हैं फिर वे अपने में से धूँआ तक नहीं निकलने देते लेकिन सेवक जज्बात में आकर ऐसी बातें कर लेता है। अपना-अपना नजरिया होता है, अपनी-अपनी समझ होती है अपना-अपना बर्तन होता है। जैसा किसी का बर्तन है परमात्मा ने उसे वैसी समझ भी दी होती है। जब गुरुदेव से पहली बार आँखों से आँखे मिली उस समय मैंने यही कहा कि मुझे पता नहीं कि मैंने आपसे क्या पूछना है? मेरा दिल-दिमाग खाली है। महाराज जी ने हँसकर कहा, ''मेरे आस-पास दिमागी पहलवान बहुत हैं, मैं खाली जगह देखकर ही आया हूँ।'' गुरु साहब प्यार से कहते हैंः

भोले भाय मिले रघुराय।

कबीर साहब कहते हैं कि अगर परमात्मा दरिया, तालाबों में नहाने-धोने से मिलता होता तो वहाँ मेढ़क-मछलियों के घर हैं उन्हें परमात्मा मिल जाना चाहिए था अगर वह चतुरों को मिलता होता तो भोले लोग रह जाते अगर वह खास भेष धारण करने से मिलता होता तो बहरूपए उसे जरूर प्राप्त कर लेते। प्यारेयो, परमात्मा को प्राप्त करने के लिए एक ही साधन है, वह साधन प्यार और इश्क का है । महात्मा चतुरदास कहते हैंः

जैसा काम इश्क कर दस्से ऐसा नहीं कटार करे।
जख्म इश्क दे रोज लगदे ते एक वार तलवार करे।
नन्ही जान आशिकां वाली इश्क तो मारो मार करे।

खाना रज न खांदा आशिक नींद्र नाल न प्यार करे।
तन सुकोंदा तीले वांगू दोने नैण फुहार करे।
'चतुरदास' वह पूरा आशिक जो अंदरो दीदार करे।

बहुत से प्रेमी दर्शनों के समय आकर कह देते हैं कि मेरा बाल–बच्चों के साथ या पत्नी के साथ बहुत प्यार है, वे मुझे याद आते हैं। मैं उस प्रेमी से कहता हूँ, ''प्यारेया, तुझे पवित्र यात्रा का मौका मिला है, तू इससे पूरा फायदा उठा। उनके साथ इश्क प्यार लग गया है तभी वे याद आते हैं।'' अगर यही इश्क गुरु के साथ लग जाए तो गुरु बिना याद किए ही आपके पास आ जाएंगे। नींद नहीं आएगी, सोएंगे तो ऐसा लगेगा कि गुरु आपके साथ ही सो रहे हैं, जागेंगे तो ऐसा लगेगा कि वह सामने ही खड़े हैं।

मेरा कहने का भाव इतना ही है कि एक मामूली मीयां–बीवी का प्यार हो जाता है तो वे किस तरह एक–दूसरे से न मिलें तो उन्हें सब्र नहीं आता। वे एक–दूसरे के तसव्वुर को आँखों के आगे लिए फिरते हैं अगर आपका प्यार–इश्क गुरु के साथ है तो क्या आप उनके तसव्वुर को आँखों से एक तरफ कर देंगे? आप कभी भी उनके तसव्वुर को आँखों से दूर नहीं करेंगे, कभी भी उन्हें भूल नहीं सकेंगे। जो यह कह देते हैं कि कई–कई घंटे सिमरन को भूले रहते हैं। इसका मतलब यह है कि अभी हमारे अंदर वह प्यार, वह इश्क पैदा नहीं हुआ। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

सुण यार हमारे सज्जणा इक करूं बिननतियां।
तिस मुँहण लाल प्यारे नूं फिरूं गुजंतियां।।

गुरु अर्जनदेव जी महाराज कहते हैंः

नैण महंजे तरसदे कद पैसी दीदार।

प्यारेयो, आँखें भी उस तरफ लग जाती हैं, मन भी उस तरफ लग जाता है, तन भी उस तरफ लग जाता है कि कब मुझे दर्शन हों।

अट्ठों पहर ताँघ दिल विच रहंदी क्यों न होय दीदार सखे।

जब आपके दिल में आठों प्रहर व्याकुलता है तो ऐसी क्या बात है कि आपका 'शब्द रूप' गुरु जो अंदर बैठा है क्या वह बेइंसाफ है? प्यार तो अंदर उसने खुद ही लगाया है, सेवक ने प्यार नहीं लगाया होता। प्यार गुरु ने लगाया होता है और इश्क गुरु ने पैदा किया होता है वह भूलता नहीं। जब हमारी प्यार की मश्क पूरी हो जाती है, उस समय गुरु जरूर प्रकट होते हैं। किताबें पढ़ना और बात है, उन्हें समझना कोई और बात होती है, किताबें हमारे अंदर सिर्फ प्यार पैदा करती हैं, गुरु से मिलने के फायदे बताती हैं। ये उन महात्माओं के व्यक्तिगत तजुर्बे हैं जिन्होंने परमात्मा से मिलाप किया और पिंड को छोड़कर ब्रह्मांड पर चढ़े।

बाबा अमोलकदास बिल्कुल भी पढ़े–लिखे नहीं थे, वे पंजाबी में भी दस्तखत नहीं कर सकते थे। उस समय हिन्दुस्तान में पढ़ाई का कोई खास विकास नहीं था। बाबा बिशनदास जी विलायत पास करके आए, उस समय जो विलायत पास करके आता था, वह हिन्दुस्तान में किसी भी बड़े से बड़े दफ्तर में जाए, उसे कुर्सी मिलती थी, उसे बहुत इज्जत और अच्छी से अच्छी नौकरी मिलती थी। वे कहा करते थे कि मैंने बहुत कुछ पढ़ लिया है लेकिन जब समझ आई तो मैंने बाबा अमोलक दास के पास जाकर हाथ जोड़कर उनसे यही कहा, ''महाराज जी, मुझे नर्क से निकाल दें।'' बाबा अमोलक दास ने उन्हें अंदर जाने का भेद दे दिया।

बाबा बिशनदास जी के पास महाराज सावन सिंह जी से ज्यादा दुनियावी तालीम थी लेकिन बाबा बिशनदास जी ने महाराज सावन सिंह जी के पास जाकर सिर झुकाया कि अब बख्श लें।

इस छोटे से शब्द में कबीर साहब हमें बहुत प्यार से समझाते हैं कि हम अंजान बच्चा बनकर ही सन्तमत से फायदा उठा सकते हैं। हमें चाहिए कि हम सन्तों के कहने के मुताबिक 'शब्द–नाम' की कमाई करें।

जारौं मैं या जग की चतुराई, जारौं मैं या जग की चतुराई।।
साँईं को नाम न कबहूँ सुमिरैं, जिन यह जुगति बताई।।

कबीर साहब प्यार से कहते हैं, ''अगर आप अंदर जाना चाहते हैं तो जो मन आपको जन्म-जन्म से धोखा दे रहा है, इसकी चतुराई में न आएं।'' सतसंगियों के साथ ऐसा रोज ही होता है, शुरु-शुरु में ये रात को उठने ही नहीं देता, जब उठने की सलाह करता है तो कहता है कि रात बड़ी है, बस सोया नहीं कि दिन चढ़ जाता है। अगर बैठ गया तो बैठे हुए को नींद ले आता है या यह सलाह दे देता है कि दिन में खाली ही हैं फिर भजन कर लेंगे। सन्त कहते हैं कि यह मन सारी जिंदगी सतसंगी को बुद्दु बनाकर रखता है। यह जिस काम के लिए सन्तमत में आता है, उसे वह काम करने ही नहीं देता।

शुरु-शुरु में जब पश्चिमी प्रेमी आने लगे तो मुझे बातचीत करने में बहुत कठिनाई होती थी क्योंकि मेरी जिंदगी अभ्यासी गुजरी थी। दर्शनों के समय एक प्रेमी आया तो मैंने उससे पूछा, ''सुना भई, भजन का क्या हाल है?'' उसने कहा, ''मुझे खाना बहुत स्वाद लगा इसलिए मैंने ज्यादा खाना खा लिया है, अब आप बैठे हुए थोड़े-थोड़े नजर आते हैं।'' मैंने उसे बहुत प्यार से कहा कि यह भी मन की चतुराई है। उस समय मन ने सलाह दी कि और खाना खा ले बाद में वही मन बताता है कि तेरे साथ धोखा हो गया है। कबीर साहब कहते हैं, ''तू ईमानदारी से गुरु का दिया हुआ नाम जप, गुरु ने तुझे अंदर जाने का रास्ता बताया है, युक्ति बताई है।''

जोरत दाम काम अपने को, हम खैहैं लरिका बिलसाई।।

कबीर साहब कहते हैं कि यह मन और चतुराई करता है, हमें माया इकट्ठी करने में लगा देता है। कहता है कि तू आराम से बैठकर खाना, तेरे लड़के खाएंगे लेकिन जब हम कीमती उसूल कुर्बान करके माया को इकट्ठी करते हैं तो मालिक की आवाज पड़ जाती है कोई और उसका वारिस बन

जाता है। कबीर साहब कहते हैं कि यह भी मन का एक धोखा है जो हमें माया इकट्ठी करने में लगा देता है। बुल्लेशाह कहते हैं:

माया जोड़ी जुड़ दी नाहीं, ना जोड़े तो जुड़ दी।
लक्खां साल जुड़ेंदे लग्गे इक पल दे विच रूड़ दी।
माया वाले ऐदां सड़न जिवें सड़े पत गुड़ दी।
बुल्लेशाह कोई मेट न सकदा कलम लिखी धुर दी।

मैं अपनी जिंदगी का वाक्या सुनाया करता हूँ कि मैं वैदिक करता था। उस समय एक आदमी ने अच्छा मकान बनाया, जब उसका अंत समय आया तो वह हमारे एक गरीब आदमी का नाम ले कि देखो जी मैंने बहुत मुश्किल से मकान बनाया है। परमात्मा तूने लेकर जाना ही है तो उस आदमी को ले जा, उसके पास कोई मकान नहीं है। मैंने उसे बहुत प्यार से कहा कि मौत तो उसे लेकर जाती है जिसका वक्त पूरा हो जाए अगर उसका मकान नहीं तो वह तेरी मौत कैसे मर जाए?

सो धन चोर मूसि लै जावै, रहा सहा लै जाय जमाई।

कबीर साहब ने हमें दुनियावी मिसालें देकर समझाया है कि जोड़ा हुआ धन कोई चोर चुराकर ले जाता है फिर नींद हराम हो जाती है। हिन्दुस्तान में यह रिवाज है कि आदमी बीस–तीस साल कमाई करता रहता है पैसे जोड़ता रहता है, जब लड़की की शादी करनी होती है तो वह सारा धन ही उस शादी में लगा देता है फिर भी पता नहीं जिन्हें लड़की दी है वह मंजूर करेंगे या नहीं? कबीर साहब कहते हैं, ''अगर चोर से बच जाता है तो जवाई आकर उस धन पर कब्जा कर लेते हैं।''

पश्चिम में शादी के रिवाज के बारे में सबको पता ही है। आश्रम में इल्विया और मार्क की शादी हुई, खेत में से सरसों के फूल तोड़कर सिर में लगा लिए, प्रेमियों ने शादी की हिदायतें पढ़कर सुना दी, लो भई शादी हो गई। कबीर साहब ने हमें दुनियावी मिसालें देकर समझाया है किस तरह

मन हमें धोखे देता है। यह भी एक बड़ा धोखा है कि इंसान लोक–लाज में आकर अपना धन–पदार्थ उड़ा देता है।

यह माया जैसे कलवारिन, मद्य पियाय राखै बौराई।।
इक तो पड़े धूरि में लोटैं, एक कहैं चोखी दे भाई।।

गुरु नानक जी कहते हैंः

भुखया भुख न उतरे जे बन्ना पुरया भार।

जिनका प्यार मालिक के साथ हो जाता है, वे इससे पीछा छुड़वाते हैं। महाराज कृपाल कहा करते थे कि माया भगवान के चरणों में गई, उसका माथा घिसा हुआ था और पिछली तरफ गर्दन पर बाल नहीं थे। भगवान उसका अचरज रूप देखकर कहने लगे, ''तेरी ऐसी हालत क्यों हुई?'' माया ने कहा, ''मैं क्या बताऊं दुनियादार तो मेरे पीछे दौड़ते हैं, मैं उनके हाथ नहीं आती, पीछे के दो–चार बाल खींच जाते हैं। मैं मालिक के प्यारों के दरबार में जाकर माथा रगड़ती हूँ कि आप मेरे थोड़े से पैसे साध–संगत में लगवाएं लेकिन वे मना कर देते हैं कि ये तेरे किसी काम आएंगे।'' इसलिए कबीर साहब प्यार से कहते हैं, ''दिन–रात अरदासें करते हैं कि हमें और मिले, उनकी भूख खत्म नहीं होती।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

लख जोड़े करोड़ जोड़े मन परे परे को होड़े रे।

सुर नर मुनि माया छलि मारें, पीर पयम्बर को धरि खाई।।

कबीर साहब कहते हैं कि मैं दुनिया के बारे में क्या बताऊं जिन ऋषि–मुनियों की स्वर्गों तक पहुँच थी या जो पीर–पैगम्बर हुए, उनको भी माया ने गिरा दिया। सिर्फ बाहर की करंसी को ही माया नहीं कहते, माया के अनेकों ही छल हैं, माया अनेकों रूप धारण करती है। कृष्ण भगवान दुर्वासा ऋषि का आदर करते थे, जब दुर्वासा ऋषि स्वर्गों तक गए तो उन्हें उर्वशी ने ठग लिया, ये भी माया है। कबीर साहब कहते हैंः

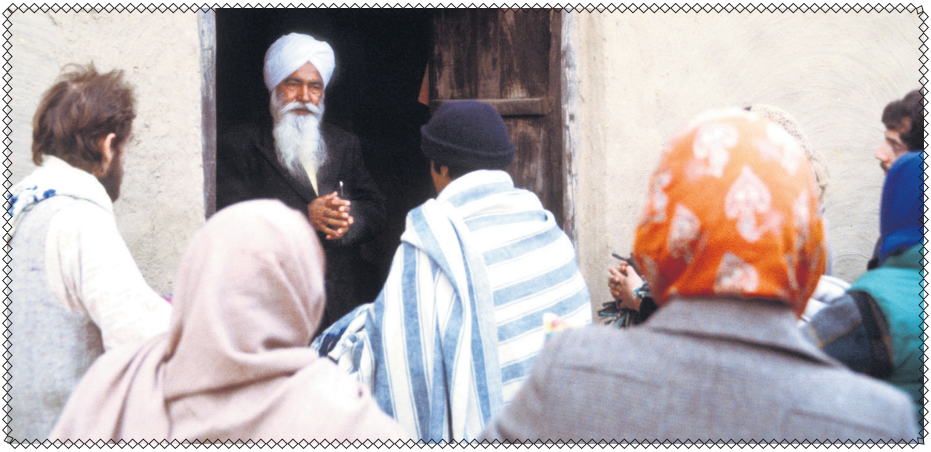

मोटी माया सब तजे झीनी तजे न कोय।
मान मुनि मन मरगले मान सभे को खाय।

कोई इक भाग बचे सत संगति, हाथ मलै तिन को पछिताई।।

गुरु साहब कहते हैं:

कोटन में कोउ जो भजन राम को पावे।

कोई विरला मालिक का प्यारा अपनी आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण का पर्दा उतारकर पारब्रह्म में पहुँच जाता है।'' वहाँ माया का नामों–निशान तक नहीं होता, जब वहाँ पहुँचकर माया की हद पार करता है तो माया पछताती है कि यह तो मेरे जाल से निकल गया। इसलिए सन्तों ने आकर अपना सतसंग जारी किया, नाम का रास्ता जारी किया, उससे बचने का यही एक तरीका है। पलटू साहब कहते हैं:

भाज रे भाज फकीर के बालके कनक और कामनी बाग लागा।
मार तूं लेंगे पेया चिल्लाएगा बड़ा बेवकूफ तू न है भागा।
शिरंगी ऋषि हूं तो मार लिए बचा न कोई जो लाख त्यागा।
दास पल्टू बचेगा सोई जो बैठ सतसंग दिन रात जागा।।

कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, लै फाँ सी हमहूँ को आई।।
गुरु की दया साध की संगति, बचिगे अभय निसान बजाई।।***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

प्लानिंग

29 दिसम्बर 1982 16 पी.एस.आश्रम, राजस्थान

एक प्रेमी : *मेरे कुछ मित्रों की अभ्यासी जिंदगी व्यतीत करने की इच्छा है इसलिए वे दुनियादारी का काम छोड़कर अपने घर पर रहते हैं, शान्त जिंदगी बिताते हैं और अपना ज्यादा समय भजन–अभ्यास में लगाते हैं। गुरु के साथ अंतरी रिश्ते में आगे कामयाब होने की कोशिश करते हैं। अब उनके पास इतने पैसे नहीं हैं कि वे गुरु के शारीरिक स्वरूप के दर्शन करने के लिए यहाँ आ सकें। क्या कभी ऐसा समय आता है जब यह बेहतर होता है कि दुनिया के सब काम–काज छोड़कर शान्त बैठकर अभ्यास किया जाए, इस बारे में आपकी क्या राय है?*

बाबा जी : हाँ भई, अभ्यास करना बहुत अच्छा है। मैं इसका स्वागत करता हूँ लेकिन दुनिया के काम–काज छोड़कर जब हम **प्लानिंग** बनाते हैं तो मन कभी–कभी ऐसे आदमियों को धोखा दे देता है फिर वे अभ्यास में भी नहीं बैठते और दुनियादारों से अलग हो जाते हैं, दुनिया को हँसने का मौका दे देते हैं कि देखो जी, इसने चार–पाँच साल अभ्यास किया, दुनिया छोड़ी और आज फिर दुनिया की तरह काम कर रहा है। इससे बेहतर यह है कि अपनी रोजी–रोटी खुद कमाएं, किसी के ऊपर बोझ न बनें और साथ ही साथ अपना अभ्यास भी जारी रखें।

मेरा व्यक्तिगत तजुर्बा है, मैंने ऐसे बहुत से आदमियों को देखा है जो कई–कई साल ऐसा जीवन व्यतीत करते हैं लेकिन जब मन धोखा देता है तो यह मन पहाड़ से उठाकर जमीन पर फैंक देता है। आज से तकरीबन पैंतीस साल पहले का वाक्या है एकमदास घर–बार छोड़कर जंगल में चला गया था। उसने बीस–पच्चीस साल बाहर बिताए आखिर मन ने कहा

कि दुनियादारी भी करनी चाहिए। बाबा बिशनदास ने उससे कहा, ''देख एकमदास, अब तू बढ़ा हो गया है अब तेरी उम्र सत्तर साल हो गई है, अब तुझसे दुनियादारी नहीं होगी।'' एकमदास ने कहा, ''नहीं जी, अब मैंने यह करना ही है।'' एकमदास ने शादी करवाई लेकिन शादी निभ न सकी और टूट गई। उसने फिर शादी की, वह बूढ़ा था औरत जवान थी। वह औरत एकमदास की पीठ पर सब्जी लादकर मंडी में बेचने के लिए ले जाती थी।

पहले मैंने जब एकमदास को देखा था, उन दिनों उसकी सेहत अच्छी थी। उसके बाद वह कमजोर हो गया। मैं एक बार बाबा बिशनदास जी के दर्शनों के लिए जा रहा था, एकमदास ने मुझे पहचान लिया और कहा, ''अजायब सिंह, तू जल्दी वापिस मत जाना, मैं तुझे कोई बात बताऊंगा।'' मैं अभी बाबा बिशनदास जी के पास बैठा था कि वह मंडी में सब्जी छोड़कर आ गया। वह छड़ी के सहारे झुककर चल रहा था। एकमदास ने मुझसे कहा, ''मैंने गाँव के सारे लोगों से कह दिया है कि वे शादी न करवाएं और मैं तुझसे भी कहता हूँ कि तू भी शादी मत करवाना।''

मैंने एकमदास से कहा, ''तू अभी भी भूला हुआ है, तुझे कोई तजुर्बा नहीं हुआ। वक्त से शादी करवाना बुरा नहीं लेकिन तू यह कह कि कोई मेरी तरह पंगा न ले।'' कहने का भाव उसने बहुत ही बुरी हालत में शरीर छोड़ा। न वह घर का रहा, न घाट का रहा।

सन्तमत हमें हाथ पर हाथ रखकर बैठने की शिक्षा नहीं देता, यह हमें मेहनत करने के लिए प्रेरित करता है। जो आदमी मेहनत से रोजी-रोटी कमाता है और अपनी कमाई को सतसंग में खर्च करता है या अपने बाल-बच्चों पर खर्च करता है और अपनी कमाई का अन्न खाता है, उस पर अच्छा असर होगा। उसका भजन-अभ्यास अच्छा बनेगा नहीं तो वह जिसका अन्न खाएगा, वह उसका भजन ले जाएगा और उसके बदले उसे काम, क्रोध, ईर्ष्या, बीमारियां मिलेंगी। मेहनती आदमी अपना पेट पालता

है और भी किसी का पेट पालता है। हमें मेहनत का चोर नहीं बनना चाहिए। अगर हम इस तरह सब कुछ छोड़कर बैठ जाते हैं तो आपको पता है कि मन फिर भी बाहर दौड़ता है। मन सारी दुनिया में फैल जाता है, मन अंदर ही बैठा–बैठा कहता है कि बाहर कोई काम भी ढूंढना चाहिए और **प्लानिंग** ही बनाता रहता है।

मैंने जब बाबा बिशनदास जी का बताया हुआ अभ्यास अठारह साल किया तो मैं उस समय से खेत में अपने हाथ से मेहनत करता रहा हूँ, मैं कभी भी हाथ के ऊपर हाथ रखकर नहीं बैठा। जब शरीर थक जाता तो अभ्यास में अपना समय व्यतीत करता और रात को जागता। हम मन को जितना थका लेंगे, यह शरारतें नहीं करेगा। जब मैंने यहाँ 16 पी. एस. में अभ्यास किया था, यह बाग उस समय ही आबाद किया था। मैं इस बाग में खुद कस्सी से अपना काम करता था अगर मन से काम लिया जाए तो यह शरारतें नहीं करता। मेहनत से कमाए हुए अन्न का अच्छा असर पड़ता है।

एक प्रेमी : *हमारे देश में जब कोई औरत पचास साल की हो जाए और उसका पति उसे छोड़ दे तो सरकार उस औरत को पेंशन देती है। अगर कोई आदमी पचास साल का हो जाए तो सरकार उसे पेंशन देती है क्या इस तरह की मदद स्वीकार करना ठीक है?*

बाबा जी : बेहतर है कि इंसान अपने पैरों पर खड़ा हो। सरकार जो पैसे देती है वह भी लोगों का दिया हुआ दान होता है, उसका कुछ कर्ज तो चुकाना ही पड़ेगा लेकिन भूखे रहने से वह प्राप्त करना अच्छा है। सतसंगी को ज्यादा भजन करना चाहिए ताकि जिन आदमियों ने ये दान दिया है उनका भी कर्ज उतरता रहे और उसका जीवन भी अच्छा चलता रहे।

एक प्रेमी : *गुरु की दया और हमारी इच्छा शक्ति इन दोनों बातों को ध्यान में रखते हुए कई बार ऐसा होता है कि हमारे दिल में कोई काम करने की इच्छा होती है लेकिन वहाँ पर गुरु की दया मौजूद नहीं होती और हम*

वह काम नहीं कर पाते। क्या कभी ऐसा भी होता है कि गुरु अपनी दया उठा लेते हैं और हमारी इच्छा होने के बावजूद वह काम नहीं होता या कई बार ऐसा हो सकता है कि गुरु की दया वहाँ पर मौजूद हो लेकिन हमारी इच्छा शक्ति में कमी होने की वजह से हम वह काम नहीं कर पा रहे?

बाबा जी : ऐसा कोई वक्त नहीं जब आपके ऊपर गुरु की दया न हो। आप कई बार ऐसे काम करते हैं जिसमें आप कामयाब नहीं होते। काम करने से पहले सोचते नहीं या अपने किसी अच्छे मित्र की सलाह नहीं लेते इसलिए आप उस काम में कामयाब नहीं होते। बेशक सतसंगी कितने भी कष्ट में है, सोया हुआ है या जाग रहा है तो सतसंगी को भूलकर भी ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि अब मेरे ऊपर गुरु की दया नहीं हो रही। सोता तो सतसंगी है गुरु नहीं सोते, शब्द रूप गुरु हमेशा ही जागते हैं, वह हमेशा ही साँस–साँस के साथ दया करते हैं। सतसंगी को भूलकर भी नहीं सोचना चाहिए कि गुरु किसी वक्त दया करते हैं और किसी वक्त दया नहीं करते।

मैं आपको एक उदाहरण देकर समझाता हूँ कि एक दुनियादार पिता अपने बच्चे के लिए हमेशा ही बेहतरी सोचता है अगर बच्चा कोई गलती कर बैठता है पिता फिर भी हिम्मत से काम लेता है। अगर बच्चा कत्ल करके जेल में चला जाता है पिता फिर भी अच्छे से अच्छा वकील करता है और उसे छुड़वाने की कोशिश करता है। एक दुनियावी पिता अपने बच्चे के लिए इतना कुछ करता है।

सन्त–सतगुरु कुलमालिक खुद ही जीवों के लिए चोला धारण करके इंसानी जामें में आते हैं। वह हजारों ही माता–पिता जैसी हमदर्दी रखते हैं, कोई कसर नहीं छोड़ते, वह बड़े ही दृढ़विश्वास के साथ हमारा पालन–पोषण भी करते हैं, हमारा ख्याल भी रखते हैं। कई बार बच्चा अग्नि में हाथ डालता है तो माता उसे अग्नि में हाथ नहीं डालने देती। माता को पता है कि बच्चे का हाथ जल जाएगा। बच्चा कोयले को हाथ में पकड़ना

चाहता है लेकिन माता–पिता को पता है कि बच्चे के हाथ काले हो जाएंगे तो माता–पिता फौरन बच्चे का हाथ पकड़ लेते हैं।

इसी तरह हमें पता नहीं होता कि हम जो काम कर रहे हैं यह हमारे फायदे का है या नुकसान का है। गुरु को पता होता है कि यह काम इसके फायदे का है या नहीं। अब जिस काम का हमें पता नहीं कि यह काम हमारे फायदे में है या नहीं या हमारी इच्छा मुताबिक नहीं होता तो हम गुरु पर अभाव ले आते हैं कि इसमें गुरु की दया नहीं थी। गुरु की दया तो है लेकिन काफी समय बाद पता चलता है कि यह काम ठीक नहीं था जो हमारी इच्छा के मुताबिक नहीं हुआ।

जब सतगुरु आते हैं तो वे हमें सतसंग के जरिए घरेलु जिंदगी सुधारने पर भी जोर देते हैं कि आप अपने घर को स्वर्ग बनाकर रखें। घर का वातावरण न बिगाड़ें और प्यार से रहें, यह परमार्थ की नींव है अगर हमारा वातावरण ठीक है तो हम आगे का रूहानी सफर बहुत अच्छे ढ़ग से चला सकते हैं। गुरु हमें समझाते हैं कि आपकी परेशानियां मेरी ही परेशानियां हैं। जरा सोचकर देखें, अगर सेवक परेशान है तो आपके अंदर जो 'शब्द रूप' गुरु बैठे हैं, वह परेशान नहीं होंगे? वह आपसे कहीं ज्यादा परेशान होंगे।

इसलिए हमें हमेशा ही अभ्यास करके अंदर जाना चाहिए, गुरु को अंदर प्रकट करना चाहिए। हम जो काम करें, गुरु का हुक्म लेकर करें ताकि आपको पता चले कि हमारे गुरु इसमें खुश हैं या नाराज हैं। जब सेवक सन्तमत के सिद्धान्तों को छोड़कर उल्टे काम करता है तो उसमें गुरु की कभी भी इच्छा नहीं होती। उस समय गुरु बहुत धीरज और सब्र से काम लेते हैं। गुरु कहते हैं कि यह भूला हुआ पुत्र क्या कर रहा है? वे फिर भी समझाने की कोशिश करते हैं। कबीर साहब कहते हैः

दास दुखी तो हरि दुखी।

गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज कहते हैंः

सुखी बसै मोरो परिवारा, सेवक सिख सभै करतारा।

सोचकर देखें जब हम सन्तमत के सिद्धान्तों से दूर चले जाते हैं तो इसका मतलब है कि हम अपने गुरुदेव के लिए परेशानियां खड़ी कर रहे हैं। हमें हमेशा ही सन्तमत के सिद्धान्तों पर चलना चाहिए, सेवक को कभी यह नहीं सोचना चाहिए कि गुरु की दया नहीं है। गुरु साहब कहते हैंः

ऐसे गुर कउ बलि बलि जाईऐ अपि मुकतु मोहि तारै।।

साँस ऊपर जाता है तब भी दया है, साँस नीचे आता है तब भी दया है।

एक प्रेमी : *एक तो सतगुरु के ऊपर कोई जोर नहीं, दूसरी बात हम लोग गुरु की दया के आसरे ही हैं। हम लोग प्यार से आपके आगे विनती करते हैं क्या आप दिल खोलकर कृपाल की खूबसूरती बयान करेंगे?*

बाबा जी : सबसे पहले तो मैं मानता हूँ कि गुरु पर हमारा जोर नहीं लेकिन जब मैंने यह भजन परमपिता कृपाल के आगे बोला तो उन्होंने कहा कि जो भजन–सिमरन करते हैं उनका गुरु के ऊपर जोर होता है। प्यारे बच्चे अपने पिता को प्यार की जंजीरों से बांध लेते हैं, पिता यह नहीं पूछता कि मुझे क्यों बांधा है क्योंकि उन्होंने पिता को अपने प्यार से वश में कर लिया होता है। प्यारे बच्चे के लिए पिता कोई कसर उठाकर नहीं रखता, वह बड़ी से बड़ी कुर्बानी करने से भी नहीं झिझकता।

एक बार मैंने कुछ आँवलों का अचार बनाया और फुल्का भी तैयार किया। गुरु दिलों की जानते हैं, वह आपके अंदर बैठे हैं। अचार बहुत स्वाद था, दिल में ख्याल आया कि गुरु नानकदेव जी की बहन फुल्का तैयार कर रही थी। उसने कहा कि यह फुल्का तो वीर के खाने वाला है। गुरु नानकदेव जी ने काफी दूर से आकर अपनी बहन की इच्छा पूरी की, क्या मेरी इच्छा भी पूरी हो सकती है?

यह एक सच्चाई है कि उसी वक्त परमपिता कृपाल कार से आए, उन्होंने पहले अपने एक प्रेमी रामलाल को भेजा कि तू जाकर बता दे कि मैं आ रहा हूँ। उन्होंने आकर खाना खाया, वह आँवला खाया जिसका जिक्र मैं कई बार सतसंगों में किया करता हूँ। परमपिता ने कहा, ''तेरा नमक खाया है, अब तुझे जरूर कुछ देना पड़ेगा।'' मैं यह कहा करता हूँ कि परमपिता कृपाल ने मेरी इच्छा पूरी की क्योंकि वे दिलों की जानते हैं।

परमपिता कृपाल का स्वरूप बयान नहीं किया जा सकता। कबीर साहब कहते हैं, ''गूँगा मिश्री खा ले तो वह उसका स्वाद नहीं बता सकता वह खुशी में उछल–कूद ही कर सकता है।'' इसी तरह वह स्वरूप देखने के काबिल है, बयान नहीं किया जा सकता। चाहे करोड़ो ग्रंथ उस स्वरूप की महिमा कर लें फिर भी वह स्वरूप बयान में नहीं आ सकता।

मैं ज्यादा से ज्यादा आपको इतना ही बता सकता हूँ कि यह दुनिया विषय–विकारों का जंगल है, इसमें मन और आत्मा भटक रहे हैं। जब इन्हें कोई पूरा गुरु मिल जाता है तो यह सिमरन के जरिए तीसरे तिल पर टिकना शुरु कर देते हैं। जब ये इससे ऊपर गुरु स्वरूप तक पहुँच जाते हैं तो मन मोहना स्वरूप जो शब्द स्वरूप है उसमें इस तरह कशिश होती है जिस तरह चुम्बक में होती है। जब लोहा चुम्बक के दायरे में आ जाए तो चुम्बक फौरन लोहे को खींच लेता है।

इसी तरह जब हमारी आत्मा 'शब्द' के दायरे में आ जाती है, अंदर चली जाती है तो वह स्वरूप हमारी आत्मा को अपने पास खींच लेता है। जब हम यह देखते हैं कि अंदर के मंडलों में हमारे गुरु की क्या हैसियत है? अंदर के मंडलों में विरोधी ताकतें हमारे गुरु की इज्जत करती हैं फिर हम गुरु को छोड़ नहीं सकते। कभी भी सोते–जागते सपने में भी गुरु को भुला नहीं सकते फिर हमारे दिल में गुरु के प्रति सच्ची इज्जत और सच्चा प्यार आ जाता है।

एक प्रेमी : *आप अभ्यास करने से पहले यह कहते हैं कि जब हम अपने मन और आत्मा को तीसरे तिल से नीचे जाने की आज्ञा देते हैं तो हम बहुत सारी ताकत खो बैठते हैं। वह कौन सी ताकत है, क्या हम शारीरिक ताकत खो बैठते हैं? महाराज जी कहा करते थे कि जब हम जोत देखते हैं सिर्फ उसी समय हम तरक्की कर रहे होते हैं। मेरा सवाल है कि ऐसा क्यों हैं? क्या जोत देखने से हमारी तरक्की होती है? इसमें कौन सी क्रिया है?*

बाबा जी : हुजूर महाराज कृपाल ने सतसंगों में सुबह के अभ्यास के ऊपर काफी रोशनी डाली है। एक तो हमने दिन में जो कारोबार किए होते हैं, नींद करने के बाद हम उन्हें बिल्कुल भूल चुके होते हैं। नींद आने के कारण शरीर बिल्कुल हल्का-फुल्का हो जाता है, उसके बाद आत्मा ने शरीर के अंदर उसी वक्त प्रवेश किया होता है। उस समय अभ्यास करने वाले की आत्मा जल्दी ही शरीर को छोड़ने में कामयाब हो जाती है। उस समय घर या मौहल्ले में कोई शोर-शराबा नहीं होता सब लोग सोए होते हैं, अभ्यासी को इस शान्त वातावरण से फायदा उठाना चाहिए।

आपने कहा है कि जब मन और आत्मा नौं द्वारों में आ जाते हैं तो हम कौन सी शक्ति गँवा रहे होते हैं। आप सोचकर देख लें कि आपका सफर यहाँ से शुरु होता है जब आप नीचे आएंगे तो आपका मन दुनिया के ख्याल ही उठाएगा। जब दुनिया के ख्याल उठेंगे तो इच्छा पैदा करेंगे, जब इच्छा उठेगी तो उसे पूरा करने के लिए आप कई अयोग्य काम भी करेंगे।

सन्तमत में हमारा मकसद जोत में जाना ही है, जोत ही जीवन है। यह परमपिता परमात्मा की जोत है, इसमें जाना ही हमारी जिंदगी है। यह जोत सच्चखंड से परमात्मा ने हमारे अंदर जगाई हुई है, यही जोत हर मंजिल के अंदर आ रही है। जैसे-जैसे हम अभ्यास करेंगे, जोत के और नजदीक होते जाएंगे। आखिर हम इस प्रकाश में अपना रास्ता नहीं भूलेंगे।

मैंने पहले दिन सतसंग में बताया था कि गुरु परमात्मा का ही प्रकाश है। गुरु कुलमालिक होते हैं जब हम जाएंगे तो सारा रास्ता देखते हुए जाएंगे।

एक प्रेमी : *सुबह के अभ्यास के बाद जब हम आपके पीछे आते हैं और आप ऊपर सीढ़ियां चढ़ जाते हैं तो हम तब भी वहाँ खड़े रहते हैं, क्या ऐसा करना नाजायज़ है?*

बाबा जी : जायज़ हो या नाजायज़ हो, यह अपना मन खुश करना है। गुरु का दर्शन किसी भी हिसाब से मिल जाए, सवाल तो दर्शन करने का है। मैं आपको महाराज सावन सिंह जी और उनके एक सेवक बलूचिस्तानी मस्ताना का एक चश्मदीद वाक्या बताता हूँ। उस समय ब्यास डेरे में बिजली नहीं थी, हाथ से ही महाराज सावन सिंह जी पर पंखा किया जाता था। एक प्रेमी पंखा कर रहा था, मस्ताना जी के दिल में ख्याल आया कि यह बड़ा चौधरी है जो पंखा कर रहा है, क्या मेरा हक नहीं, क्या ये मेरे मालिक नहीं? उसे कई आदमियों ने रोका लेकिन मस्ताना जी के दिल में यह ख्याल आया कि गुरु के लिए कितनी भी कुर्बानी की जाए वह कुर्बानी छोटी है। महाराज सावन सिंह जी यह बात कहा करते थेः

सपां वांड़ समुंद घर शेरा पए बकुन, जे जम होए पेहरू प्रेमी न रूकन।

यह तो एक बंदा है। आखिर मस्ताना जी ने धक्का देकर उससे पंखा पकड़ लिया। वह आदमी भी अकड़ा हुआ था कि मैं पंखा कर रहा हूँ। मस्ताना जी ने उससे पंखा छीनने की कोशिश की लेकिन उसने पंखा नहीं छोड़ा। आखिर मस्ताना जी ने जफ्फा डालकर उसे महाराज सावन के ऊपर ही गिरा दिया। महाराज जी ने उस आदमी से कहा, ''तू हटता नहीं।'' उस आदमी ने कहा, ''मस्ताना नहीं हट रहा।'' महाराज जी ने उससे कहा, ''अगर यह नहीं हट रहा तो तू हट जा।'' जब ऐसा हुआ तो महाराज जी काफी नाराज हुए। मस्ताना जी ने कहा, ''सच्चे पातशाह, यह मुझे पंखा क्यों नहीं दे रहा, क्या इसका आपके ऊपर ज्यादा हक है?''

महाराज जी ने कहा, ''तू मुझे बहुत तंग करता है, जाकर कुंए में छलांग लगा।'' आपको पता है कि प्रेमी रूकता नहीं क्योंकि गुरु का हुक्म मानना जरूरी होता है। उन्होंने सतसंग घर के नजदीक ही कुएं में छलांग लगा दी।

महाराज सावन सिंह जी बड़ी जल्दी से गए, नीचे कुएं में रस्सा फैंका और कहा, ''तू रस्सा पकड़कर ऊपर आ जा।'' उन्होंने रस्सा नहीं पकड़ा। कुंए में पानी काफी गहरा था, वे कहने लगे, ''हमने तो हुक्म मानना है, अब आप डूबने क्यों नहीं देते?'' उनके कहने का यह मतलब था कि नीचे सावन शाह ने हाथ दिए हुए हैं।

बलूचिस्तानी मस्ताना जी कहा करते थे कि गुरु का दर्शन करने के लिए चाहे कितनी भी बड़ी रूकावट क्यों न हो, कितने भी कठोर हुक्म क्यों न हों, यम जिसने साँस निकालने हैं वह भी खड़ा हो, शेर भी दहाड़ रहा हो, प्रेमी कभी भी गुरु के दर्शन से नहीं रूकेगा। महात्मा चतुरदास को भी महाराज सावन से नामदान था। वह लिखते हैंः

बेपरवाह पिया पर पास खड़न न देवे, छाया तक बेसब्रा आशिक दिल नूं खुश कर लेवे।
चिक झरोखे पास खड़ोके दूरों यार तकेंदा,ऐहवी जाण गनीमत दिल नूं लख लख शुकर करेंदा।

गुरु को किसी की परवाह नहीं होती, वह अपने मालिक में समाए होते हैं, वह अपने गुरु के प्यार में होते हैं, हर एक को पास नहीं आने देते। प्रेमी गुरु को दूर से ही देखते हैं। प्रेमी दूर जाकर खड़े हो जाते हैं कि यहाँ से थोड़ा-थोड़ा दिखते हैं।

एक बार परमपिता कृपाल मेरे चौबारे में आराम कर रहे थे, दो प्रेमी पता नहीं कहाँ से ऊपर सीढ़ियां चढ़ गए, उन्होंने दरवाजा खोल दिया। महाराज जी बिजली की तरह कड़के, ''मुझे आराम क्यों नहीं करने देते।'' एक प्रेमी ने दूसरे से कहा, ''मिल गई प्रसादी कितनी स्वाद है, दर्शन करके दिल बहुत खुश हुआ।'' कहने का भाव प्रेमी तो दर्शन करके हमेशा खुश होते हैं, प्रेमी को तो दर्शन करने से मतलब है, वह दर्शनों के लिए किसी की परवाह नहीं करते। ✻✻✻

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा भजन गाने पर दिया गया एक संदेश

एक संदेश

DVD-394

11 जुलाई 1987

बैंगलोर

हाँ भई, हमें गुरु यश करने का बहुत अच्छा मौका मिला है, हमारे वेद–शास्त्र गुरु यश से भरे हुए हैं। हमें धर्मग्रंथों में गुरु शिष्यों की कहानियाँ पढ़ने को मिलती हैं कि गुरु का अपने शिष्यों से कितना प्यार होता है। जिन शिष्यों की आत्माएं जाग जाती हैं, उनका भी अपने गुरु के प्रति बहुत आभार और प्यार होता है।

बहुत भाग्यशाली जीव ही इस संसार में आए हुए महात्माओं की कद्र करते हैं और उनके संपर्क में जाते हैं, वे अपना जीवन सुधारते हैं और चौरासी के चक्कर से बच जाते हैं। यह सब परमात्मा की ही दया है, नहीं तो किसका दिल नहीं करता कि मैं परमात्मा से मिलूं और अपने अंदर गुरु प्यार को प्रकट करूं या मैं भक्ति करके बेहतर बनूं।

यह सब हमारे कर्मों पर निर्भर करता है कि हमने कौन सा रास्ता चुनना है। किसी का भी दिल नहीं करता कि मैं चोर–ठग बनूं या मैं किसी की निन्दा करूं, यह सब हमारे पिछले कर्मों पर ही निर्भर करता है। हमारे जन्मों–जन्मों के अच्छे कर्म हों तो ही हम महात्मा की संगत में आते हैं, उससे भी अच्छे कर्म हों तो हम उनसे 'नामदान' प्राप्त करते हैं, उससे भी अच्छे कर्म हों तो हम 'शब्द–नाम' की कमाई करते हैं और अपने अंदर गुरु स्वरूप को टिकने का मौका देते हैं।

जब गुरु नानकदेव जी महाराज को गुरु का इश्क लगा और उनके अंदर प्यार जागा तो उन्होंने बहुत दूर–दूर तक यात्राएं की और लोगों में गुरु का प्यार बाँटा। जब यही इश्क स्वामी जी महाराज के अंदर पैदा हुआ तो उन्होंने भी दुनिया के अंदर अपने गुरु को गाया और गुरु से मिलने के, नाम के और सतसंग के फायदे बताए। इसी तरह जब महाराज सावन सिंह जी को अपने गुरु का इश्क और प्यार लगा तो उन्होंने पैंतालिस साल हिन्दुस्तान के कोने–कोने में जाकर अपने गुरु का यश गाया और लोगों को बताया कि गुरु के मिलने से जिंदगी की काया पलट जाती है, हम नाम की तरफ जाग जाते हैं और दुनिया की तरफ से सो जाते हैं।

इसी तरह जब महाराज कृपाल के अंदर महाराज सावन सिंह जी का प्यार प्रकट हुआ तो उन्हें पता चला कि ये कुल मालिक चोला बदलकर इस संसार में आए हैं और कितने ही अभागे जीव हैं जो इनसे फायदा नहीं उठा रहे। उन्होंने पश्चिमी देशों में, हिन्दुस्तान में और हर जगह ही गुरु प्यार की कहानियाँ सुनाई।

दक्षिण भारत में कोई भी गुरु नानकदेव जी, बाबा जयमल सिंह जी और महाराज सावन सिंह जी की भाषा को नहीं समझता था। जहाँ बारिश की कमी रहती है आपको पता ही है जब धरती खुष्क रहती है तो हृदय भी गुरु प्यार के प्रति खुष्क रहते हैं। जब बाबा सोमनाथ जी के दिल में महाराज सावन का प्यार जागा तो उस मालिक के प्यारे ने इस धरती पर बैठकर लोगों के अंदर सावन का प्यार जगाया।

प्रेमी भजन बोल रहे थे कि गुरु के प्यार की कहानी जुबान से बयान नहीं की जा सकती। सहजो बाई कहती हैं, ''अगर मैं सारी धरती का कागज बना लूं और सारे समुंद्रों की स्याही बना लूं तब भी मैं अपने गुरु की बड़ाई, गुरु का यश और गुरु का प्यार लोगों को बताना चाहूँ तो बता नहीं सकती।''

गुरु का प्यार न बाजारों में बिकता है और न खेतों में ही उगता है, इसे हम पैसे देकर या व्यापार करके प्राप्त नहीं कर सकते। गुरु का प्यार हृदय में ही पैदा किया जा सकता है और इसे गुरु ही दे सकते हैं।

यह उनकी ही दया है जो हम कई दिन यहाँ बैठकर उनका यश करते रहे हैं अगर वे दया न करते तो हम कैसे उनका यश कर सकते हैं। गुरु साहब ने कहा है:

बिनु भागा सतिगुरु ना मिलै घरि बैठिआ निकटि नित पासि।।

अगर हमारे भाग्य में नहीं होगा तो चाहे गुरु घर चलकर आ जाएं या हमारे पास ही बैठे रहें लेकिन हमें ऐतबार ही नहीं आएगा और समझ ही नहीं आएगी कि गुरु क्या चीज हैं?

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

नाम पारस है

16 पी. एस. आश्रम राजस्थान

महात्मा हमें बताते हैं कि सतसंग पारस की वट्टी होती है। जिस तरह पारस एक पत्थर होता है, हम स्यानों से सुनते हैं कि पारस में इस किस्म का गुण होता है अगर वह लोहे से लग जाए तो लोहा सोना बन जाता है।

महाराज सावन सिंह जी बताया करते थे कि एक महात्मा किसी साहूकार के घर चले गए, साहूकार ने महात्मा के सामने अपनी तंगी जाहिर की कि मुझे व्यापार में बहुत घाटा पड़ गया है, आप दया–मेहर करें। महात्मा दया के पुंज होते हैं। महात्मा ने उसे पारस देकर कहा, ''मैं तुझे तीन महीने के लिए यह पारस देता हूँ। तू इससे जितना मर्जी सोना बना लेना, मैं तीन महीने बाद यह पारस वापिस ले जाऊंगा।''

साहूकार ने बाजार में जाकर पूछा कि लोहे का क्या भाव है? उन्होंने कहा कि सेठ जी, अगर आप कल आते तो भाव बहुत सस्ता दो–तीन रूपये किलो था, आज भाव छह–सात रूपये किलो है। साहूकार ने कहा, ''जब लोहा दो रूपये किलो होगा तब लूंगा, मैं इतना पागल नहीं जो घाटेमंद सौदा करूं।'' इसी तरह वह फिर थोड़े दिन बाद गया और पूछा कि लोहे का क्या भाव है? उन्होंने कहा, सेठ जी, कल छह–सात रूपये किलो था आज दस बारह रूपये किलो है। साहूकार ने कहा कि जब लोहा छह–सात रूपये किलो होगा, मैं फिर लूंगा, मैं घाटेमंद सौदा क्यों करूं। उसे पता नहीं था कि लोहा मंहगा होगा तो सोने की धातू उससे भी महंगी होगी।

आखिर सलाह करते–करते ही वक्त आ गया, महात्मा टाइम से आ गए। महात्मा ने पूछा, ''क्यों भई भक्त, सोना बनाकर अच्छा व्यापार या

कारोबार किया?'' साहूकार ने कहा, ''मैं आपको क्या बताऊं, लोहा महंगा हो गया और मैंने इससे कोई फायदा नहीं उठाया।'' महात्मा अपना पारस लेकर चल पड़े, साहूकार की वही कंगालों वाली हालत रही।

कहने का भाव **नाम पारस है।** महात्मा हमें नाम का पारस देने के लिए आते हैं। महात्मा जिस आत्मा को पारस लगा देते हैं, वह परमात्मा बन जाती है लेकिन हम इंसानी जामें की कद्र नहीं करते। हम कहते हैं कि आज भजन करेंगे, कल भजन करेंगे। कबीर साहब कहते हैंः

कल करेंता अज कर अज करता सोई ताल।
पाछे कछु न होवई जब सिर पर आया काल।।

भाई, जो कल करना था वह आज कर लेता और जो आज करना है वह सुबह ही कर लेना था। कहने का भाव यह है कि हम प्लानिंग बनाते-बनाते अपना वक्त खराब कर देते हैं। हमें यह नहीं पता कि परमात्मा की क्या प्लानिंग है, परमात्मा की क्या मर्जी है। हम अपनी प्लानिंग के मुताबिक परमात्मा को चलाना चाहते हैं।

महात्मा हमें **नाम का पारस** देते हैं लेकिन हम दलीलें करते-करते वक्त खराब कर देते हैं। वक्त आने पर हमें इस जिस्म से अलग कर दिया जाता है। कोई यह नहीं पूछता कि तूने सारे काम कर लिए? कोई भी यह नहीं कहता कि मेरे सारे संसारिक काम पूरे हो गए हैं, किसी के दस काम पूरे हो गए, पाँच काम अधूरे रह गए। किसी के पाँच काम पूरे हो गए और दस काम अधूरे रह गए।

महात्मा कहते हैं कि हमें जो काम करना चाहिए, हम वह काम नहीं करते। वह काम है सतसंग में जाना, नाम की कमाई करना और अपने आपको 'शब्द-नाम' के साथ जोड़कर रखना।

***

उठ जाग मुसाफिर भोर भई

उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहाँ जो सोवत है, x 2

1 जो जागत है सो पावत है, जो सोवत है सो खोवत है, x 2
उठ जाग मुसाफिर....

2 उठ नींद से अक्खियां खोल जरा और अपने गुरु से ध्यान लगा, x 2
यह प्रीत करन की रीत नहीं x 2 गुरु जागत है तू सोवत है,
उठ जाग मुसाफिर....

3 जो कल करना सो अज कर ले, जो अज करना सो अब कर ले, x 2
जब चिड़ियों ने चुग खेत लिया,x 2 फिर पछताऐ क्या होवत है,
उठ जाग मुसाफिर....

4 नादान भुगत करनी अपनी, ऐ पापी पाप में चैन कहाँ, x 2
जब पाप की गठड़ी शीश धरी,x 2 तब शीश पकड़ क्यों रोवत है,
उठ जाग मुसाफिर....

परम सन्त कृपाल सिंह जी के मुखारविंद से

1 अगर कोई आप पर अहसान करे तो उसे भूलना नहीं।

2 अगर कोई आपको पानी पिलाए तो उस पानी को दूध की तरह समझना।

3 अगर आप किसी का फायदा करें तो उसे जुबान पर न लाएं और उससे यह आशा न रखें कि मैंने इसका फायदा किया है, यह भी मेरा फायदा करे।

4 किसी इंसान से आशा रखना सबसे बड़ी गलती है।

परमात्मा ने इस संसार में अलग–अलग तरह के लोगों को बनाया है, उनमें शेख चिल्ली नाम का एक अलग ही तरह का इंसान था। शेख चिल्ली दिन में भी सपने देखा करता था। एक बार वह कहीं बैठा हुआ था, तभी एक पुलिस वाला उसके पास आया और उससे बोला, ''अगर तुम यह घी का टीन उठाकर मेरे साथ चलोगे तो मैं तुम्हें दो रूपये दूँगा।''

शेख चिल्ली ने कहा, ''ठीक है।'' शेख चिल्ली घी का टीन सिर पर उठाकर पुलिस वाले के साथ चल पड़ा। शेख चिल्ली चलते–चलते सोचने लगा कि मैं इन दो रूपयों से अंडे खरीदूंगा। अंडों में से जो बच्चे निकलेंगे, वे बड़े होकर मुर्गियां बनेंगी। मैं उन मुर्गियों को बेचकर बकरियाँ खरीदूँगा फिर बकरियों को बेचकर गाय खरीदूँगा।

गाय बेचकर जो पैसे मिलेंगे, उनसे मैं अपनी शादी करवाऊँगा फिर मेरे बच्चे होंगे। मैं अपने बच्चों से बहुत प्यार करूंगा अगर बच्चे आपस में झगड़ा करेंगे तो मैं उन्हें समझाऊँगा। जब बच्चे मेरा कहना नहीं मानेंगे तो मैं उन्हें ऐसे लात मारूंगा। उसने जैसे ही लात मारी उसके सिर पर रखा हुआ घी का

टीन नीचे गिर गया। पुलिस वाले ने शेख चिल्ली को गुस्से से कहा, ''तुमने तो मेरा नुकसान कर दिया।'' शेख चिल्ली ने कहा, ''तुम्हारा तो थोड़े से पैसों का नुकसान हुआ है लेकिन मेरा तो पूरा परिवार ही उजड़ गया है।''

हमें इस कहानी से यह सीख मिलती है कि हमारा मन भी शेख चिल्ली की तरह है, यह मन सारा दिन ख्यालों में ही खोया रहता है। जो लोग मन का कहना मानते हैं, वे मूर्ख और मनमुख हैं, वे परमात्मा की दया को नहीं समझते। इसलिए हमें मनमुख नहीं बनना बल्कि गुरमुख बनना है जो गुरु की बात मानते हैं, मन की बात नहीं मानते।

हम तभी सफल हो सकते हैं जब हम अपना काम मन लगाकर करते हैं और अपने मन को शेख चिल्ली की तरह इधर–उधर भटकने नहीं देते।

सही का मिलान करें।

1.	मानस जन्म	A दयालु होना और दूसरों की मदद करना
2.	सुख–दुख	B हमें सही रास्ता दिखाते हैं
3.	सन्त	C हमारे पूर्व कर्मों का फल
4.	अच्छे कर्म	D जीव जैसे गाय, भैंस, बकरी
5.	दया	E बहुत दुर्लभ और विशेष
6.	पशु	F अच्छा फल देते हैं

सही उत्तर

1 = E, 2 = C, 3 = B, 4 = F, 5 = A, 6 = D

छोटा अभ्यास :

उन चार चीजों पर गोला लगाएं जिन्हें हमें हर दिन करना चाहिए।

दया, गुस्सा, दूसरों की मदद करना, सच बोलना, जानवरों को चोट पहुँचाना, बाँटना

अभ्यास : दया, दूसरों की मदद करना, सच बोलना, बाँटना

धन्य अजायब

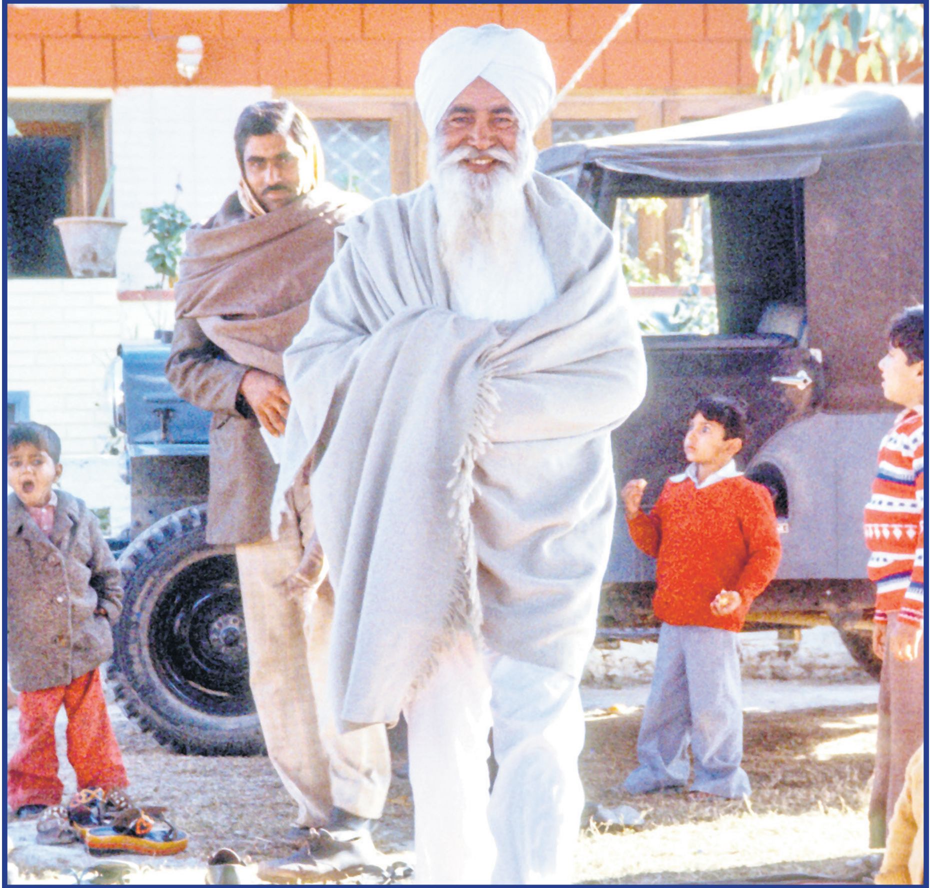

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान में सतसंगों के कार्यक्रम :

1. 07 सितम्बर से 12 सितम्बर
2. 02 अक्टूबर से 04 अक्टूबर
3. 30, 31 अक्टूबर व 01 नवम्बर
4. 04 दिसम्बर से 06 दिसम्बर

RNI No - RAJHIN/2003/9899

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज, 11 सितम्बर 1926

मैं ज्यादा से ज्यादा आपको इतना ही बता सकता हूँ कि यह दुनिया विषय-विकारों का जंगल है, इसमें मन और आत्मा भटक रहे हैं। जब इन्हें कोई पूरा गुरु मिल जाता है तो यह सिमरन के जरिए तीसरे तिल पर टिकना शुरु कर देते हैं। जब ये इससे ऊपर गुरु स्वरूप तक पहुँच जाते हैं तो मन मोहना स्वरूप जो शब्द स्वरूप है उसमें इस तरह कशिश होती है जिस तरह चुम्बक में होती है। जब लोहा चुम्बक के दायरे में आ जाए तो चुम्बक फौरन लोहे को खींच लेता है।